TA'ZEEME MUSTAFA

MA-A JASHNE MEELAD KI BARAKATEN

(HINDI BAYAAN)

ता'ज़ीमे मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

मअ़ जश्ने मीलाद की बरकतें

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में

होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद आने पर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

शाफ़ेए उमम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े, उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है :[1]

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

पूछेगा मौला लाया है क्या क्या मैं येह कहूंगा नामे मुह़म्मद (ﷺ)
रखो लह़द में जिस दम अ़ज़ीज़ो मुझ को सुनाना नामे मुह़म्मद (ﷺ)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ुसूले सवाब की ख़ात़िर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ﴿نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ﴾ मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِيْر لِلطَّبَرَانِی ج٦ ص١٨٥ حديث ٥٩٤٢)

दो मदनी फूल :

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

---

1 ...الترغيب والترهيب، كتاب الذكر والدعاء، ٢/٣٢٩، حديث: ٣٠

www.dawateislami.net

बयान सुनने की निय्यतें

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा। ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ात़िर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा। ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा। ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा। ۞ صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ، اُذْكُرُوااللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा। ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा।

बयान करने की निय्यतें

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा। ۞ देख कर बयान करूंगा। ۞ पारह 14 सूरतुन्नह़्ल, आयत 125 "اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ" (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस 4361) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "بَلِّغُوْا عَنِّىْ وَلَوْ اٰيَةً" या'नी पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो" में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा। ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा। ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इ़ल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा। ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा, बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा। ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा। ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेह्न बनाने की ख़ात़िर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हुज़ूर की ता'ज़ीम बख़्शिश का सबब बन गई

हज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि बनी इस्राईल में एक ऐसा शख़्स था जिस ने अपनी ज़िन्दगी के दो सो (200) साल, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में गुज़ारे, इसी ना फ़रमानी के आ़लम में उस की मौत वाक़ेअ़ हो गई, बनी इस्राईल ने उस के मुर्दा जिस्म को टांग से पकड़ कर घसीटते हुवे गन्दगी के ढेर पर फेंक दिया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने नबी हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह्य भेजी कि उस को वहां से उठाओ और उस की तजहीज़ो तक्फ़ीन कर के उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ो । हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने लोगों से उस के मुतअ़ल्लिक़ पूछा, तो उन्हों ने उस के बद किरदार होने की गवाही दी, हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! बनी इस्राईल तो इस के बद किरदार होने की गवाही दे रहे हैं कि इस ने अपनी ज़िन्दगी के दो सो साल तेरी ना फ़रमानी में गुज़ारे हैं ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह्य फ़रमाई कि येह ऐसा ही बद किरदार था, मगर इस की येह आ़दत थी कि जब कभी तौरात शरीफ़ पढ़ने के लिये खोलता और मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) के इस्मे गिरामी की त़रफ़ देखता तो उस को चूम कर अपनी आंखों से लगा लेता और उन पर दुरूद पढ़ा करता, पस मैं ने इस के इस अ़मल की क़दर की और इस के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा कर इस का निकाह़ सत्तर हूरों के साथ कर दिया । (حِليةالاولياء، ۴/۴۵،حديث:۴۶۹۵)

गुनाहगार हूं मैं लाइक़े जहन्नम हूं
करम से बख़्श दे मुझ को न दे सज़ा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत ने तो अहले ईमान के दिलो दिमाग़ को मुअ़त्त़र कर दिया, वोह शख़्स कि जो त़वील अ़र्से तक गुनाहों में मुब्तला रहा और इस दौरान नेकियों के क़रीब भी न गया, लेकिन सिर्फ़ नामे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम के सबब उसे येह इन्आ़म मिला कि ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ब हुक्मे ख़ुदावन्दी उस की तजहीज़ो तक्फ़ीन का इन्तिज़ाम फ़रमाया, उस के साबिक़ा तमाम गुनाह मुआ़फ़ कर दिये गए और वोह रह़मते ख़ुदावन्दी का मुस्तह़िक़ ठहरा। ग़ौर कीजिये कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का उम्मती नामे मुस्त़फ़ा की ता'ज़ीम के सबब बख़्शिश व मग़फ़िरत का ह़क़दार हो सकता है तो फिर उम्मते मुह़म्मदिय्या का वोह फ़र्द जो अपने प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के न सिर्फ़ नाम की ता'ज़ीम करे बल्कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात और इस से निस्बत रखने वाली हर शै की ता'ज़ीम को लाज़िम व ज़रूरी जाने तो फिर उस पर रह़मते ख़ुदावन्दी की कैसी छमाछम बारिशें होंगी ! नीज़ इस रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के नामे मुबारक को ता'ज़ीम की निय्यत से चूमना न सिर्फ़ जाइज़ है बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व ख़ुशनूदी ह़ासिल करने का ज़रीआ़ भी है। याद रखिये ! ईमान लाने के बा'द ता'ज़ीमे मुस्त़फ़ा ही मत़्लूबो मक़्सूद है, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़्मतो मह़ब्बत पर ही ईमान का मदार है। दा'वए ईमान के लिये अ़ज़्मते मुस्त़फ़ा की अहम्मिय्यत व ज़रूरत पर कई आयाते मुबारका दलालत करती हैं।

चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पारह 26, सूरतुल फ़त्ह़, आयत नम्बर 8 और 9 में इरशाद फ़रमाता है :

إِنَّآ أَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿۸﴾ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ؕ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّأَصِيْلًا ﴿۹﴾ (پارہ:۲۶، الفتح:۸،۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने तुम्हें भेजा ह़ाज़िरो नाज़िर और ख़ुशी और डर सुनाता ताकि ऐ लोगो तुम अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाओ और रसूल की ता'ज़ीम व तौक़ीर करो और सुब्ह़ो शाम अल्लाह की पाकी बोलो।

www.dawateislami.net

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने इस आयते करीमा के ज़िम्न में जो इरशाद फ़रमाया उस का ख़ुलासा येह है : मुसलमानो ! देखो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दीने इस्लाम भेजने, क़ुरआने मजीद उतारने का मक़्सद तीन बातें इरशाद फ़रमाई हैं : पहली येह कि अल्लाह व रसूल पर ईमान लाना, दूसरी येह कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम करना, तीसरी येह कि अल्लाह तबारक व तआ़ला की इ़बादत करना। इन तीनों बातों की बेहतरीन तरतीब तो देखिये, सब से पहले ईमान का ज़िक्र फ़रमाया और सब से आख़िर में अपनी इ़बादत का और दरमियान में अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम का हुक्म इरशाद फ़रमाया, क्यूंकि ईमान के बिग़ैर हुज़ूर की ता'ज़ीम फ़ाइदा न देगी। बहुत से ग़ैर मुस्लिम ऐसे हैं कि नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तकरीम और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर ग़ैर मुस्लिमों की त़रफ़ से किये जाने वाले ए'तिराज़ात के जवाबात में किताबें लिखते और लेकचर देते हैं, मगर चूंकि ईमान न लाए, तो उन का ए'तिराज़ात के जवाब देना फ़ाइदा मन्द नहीं होगा, क्यूंकि येह ज़ाहिरी ता'ज़ीम है, अगर दिल में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सच्ची अ़ज़मत होती तो ज़रूर ईमान लाते। क्यूंकि जब तक नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सच्ची ता'ज़ीम न हो तो अगर्चे सारी ज़िन्दगी इ़बादते इलाही में गुज़रे, सब बेकार है और बारगाहे इलाही में अस्लन क़ाबिले क़बूल नहीं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ऐसों के बारे में फ़रमाता है :

وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿۲۳﴾

(پارہ:۱۹، الفرقان:۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कुछ उन्हों ने काम किये थे हम ने क़स्द फ़रमा कर उन्हें बारीक बारीक गुबार के बिखरे हुवे ज़र्रे कर दिया कि रोज़न की धूप में नज़र आते हैं।

और येह भी इरशाद फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ﴿٣﴾ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ﴿٤﴾

(پارہ:۳۰،الغاشیہ:۳،۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *काम करें मशक़्क़त झेलें, जाएं भड़कती आग में।*

या'नी अ़मल करें, मशक़्क़तें उठाएं और बदला क्या होगा ? येही कि भड़कती आग में जाएंगे। (फ़तावा रज़विय्या : 30/307)

आज ले उन की पनाह आज मदद मांग उन से
फिर न मानेंगे क़ियामत में अगर मान गया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा आयाते मुबारका और आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इरशादाते आ़लिय्या से वाज़ेह़ हुवा कि ता'ज़ीमे मुस्त़फ़ा ही अस्ले ईमान है। अगर कोई शख़्स अ़ज़मते मुस्त़फ़ा से पहलू तही (किनारा कशी) करते हुवे दीगर नेक आ'माल की सअ़्य(कोशिश) करता है, तो इस का कोई अ़मल क़ाबिले क़बूल न होगा। ता'ज़ीमे मुस्त़फ़ा में ज़रा सी ख़ामी तमाम नेक आ'माल की बरबादी का बाइ़स बन सकती है। जैसा कि पारह 26 सूरतुल हुजुरात की आयत नम्बर 2 में इरशादे बारी तआ़ला है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَ لَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَ اَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿۲﴾

(پارہ:۲۶،الحجرات:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो ! अपनी आवाज़ें ऊंची न करो उस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से और उन के हुज़ूर बात चिल्ला कर न कहो जैसे आपस में एक दूसरे के सामने चिल्लाते हो कि कहीं तुम्हारे अ़मल अकारत (ज़ाएअ़) न हो जाएं और तुम्हें ख़बर न हो।*

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस आयते करीमा के तह़त फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा कि हुज़ूर की अदना बे अदबी कुफ़्र है, क्यूंकि कुफ़्र ही से नेकियां बरबाद होती हैं, जब इन की बारगाह में ऊंची आवाज़ से बोलने पर नेकियां बरबाद हैं, तो दूसरी बे अदबी का ज़िक्र ही क्या है ? आयत का मत़लब येह है कि न इन के हुज़ूर चिल्ला कर बोलो,

www.dawateislami.net

न इन्हें आ़म अल्क़ाब से पुकारो, जिन से एक दूसरे को पुकारते हैं। चचा, अब्बा, भाई, बशर न कहो। रसूलुल्लाह, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन कहो।

(नूरुल इरफ़ान : 823)

बारगाहे नाज़ में आहिस्ता बोल

हो न सब कुछ राएगां आहिस्ता चल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **अल्लाह** रह़मान عَزَّوَجَلَّ का पाक कलाम सय्यिदुल इन्सो जान صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़मतो शान में रत़बुल्लिसान है और हमें उन के दर की ह़ाज़िरी के आदाब सिखा रहा है कि दरबारे रिसालत عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में सिर्फ़ आवाज़ का बुलन्द हो जाना ही इतना बड़ा जुर्म है कि इस की वज्ह से तमाम नेकियां ज़ाएअ़ हो जाती हैं।

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : दुन्यावी बादशाहों के दरबारी आदाब, इन्सानी साख़्त (इन्सानों के बनाए हुवे) हैं, मगर हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के दरवाज़े शरीफ़ के आदाब रब (عَزَّوَجَلَّ) ने बनाए, (और) रब (عَزَّوَجَلَّ) ने (ही) सिखाए, नीज़ येह आदाब सिर्फ़ इन्सानों पर ही जारी नहीं बल्कि जिन्नो इन्स व फ़िरिश्ते सब पर जारी (होते) हैं। फ़िरिश्ते भी इजाज़त ले कर दौलत ख़ाने में ह़ाज़िरी देते थे, फिर येह आदाब हमेशा के लिये हैं। (नूरुल इरफ़ान : 823)

तेरे रुत्बे में जिस ने चूनो चरा की

न समझा वोह बद बख़्त रुत्बा ख़ुदा का

(ज़ौक़े ना'त, स. 38)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तमाम ही अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام वाजिबुल एह़तिराम और लाइक़े ता'ज़ीम हैं, क़ुरआने करीम में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर अम्बियाए किराम की ता'ज़ीम का हुक्म इरशाद फ़रमाया और इस हुक्म की बजा आवरी करने वालों को इन्आ़म व इकराम से नवाज़ने का वा'दा भी फ़रमाया है। चुनान्चे, पारह 6 सूरतुल माइदह की आयत नम्बर 12 में इरशाद होता है :

www.dawateislami.net

وَ اٰمَنْتُمْ بِرُسُلِیْ وَ عَزَّرْتُمُوْهُمْ وَ اَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَیِّاٰتِكُمْ وَ لَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُۚ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और मेरे रसूलों पर ईमान लाओ और उन की ता'ज़ीम करो और* **अल्लाह** *को क़र्ज़े ह़सन दो तो बेशक मैं तुम्हारे गुनाह उतार दूंगा और ज़रूर तुम्हें बाग़ों में ले जाऊंगा जिन के नीचे नहरें रवां*

बिल खुसूस हुज़ूर عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान लाने के बा'द आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम करने वालों को फ़लाह़ो कामरानी की बिशारत अ़त़ा फ़रमाई है : चुनान्चे, पारह 9 सूरतुल आ'राफ़ की आयत नम्बर 157 में इरशाद होता है :

فَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَ عَزَّرُوْهُ وَ نَصَرُوْهُ وَ اتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ مَعَهٗۤۙ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ۠

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो वोह जो उस पर ईमान लाएं और उस की ता'ज़ीम करें और उसे मदद दें और उस नूर की पैरवी करें जो उस के साथ उतरा वोही बा मुराद हुवे।*

याद रखिये ! येह इन्आ़मात उसी वक़्त ह़ासिल होंगे कि जब हम हर मुआ़मले में तमाम अम्बिया عَلَیْهِمُ السَّلَام खुसूसन सय्यिदुल अम्बिया, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तौक़ीर को अपने ईमान का ह़िस्सा समझेंगे और इन की अदना से अदना तौहीन से भी बचने की कोशिश करेंगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आदाबे नबवी सिखाते हुवे जहां बारगाहे रिसालत में आवाज़ बुलन्द करने से मन्अ़ फ़रमाया, वहीं आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को दरमियाना अन्दाज़ में पुकारने की भी मुमानअ़त फ़रमाई है।

चुनान्चे, पारह 18, सूरतुन्नूर की आयत नम्बर 63 में इरशाद होता है :

لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَیْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًاؕ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *रसूल के पुकारने को आपस में ऐसा न ठहरा लो जैसा तुम में एक दूसरे को पुकारता है,*

सदरुल अफ़ाज़िल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : (इस आयत के) एक मा'ना मुफ़स्सिरीन

www.dawateislami.net

ने येह भी बयान फ़रमाए हैं कि (जब कोई) रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को निदा करे (पुकारे) तो अदब व तकरीम और तौक़ीर व ता'ज़ीम के साथ आप के मुअ़ज़्ज़म अल्क़ाब से नर्म आवाज़ के साथ मुतवाज़ेआ़ना व मुन्कसिराना (आ़जिज़ी वाले) लह्जे में **"या नबिय्यल्लाह ! या रसूलल्लाह ! या ह़बीबल्लाह !"** कह कर। (तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 18, सूरतुन्नूर तह़्तुल आयत : 63)

इमामुल मुफ़स्सिरीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ इरशाद फ़रमाते हैं : पहले हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) को **या मुह़म्मद, या अबल क़ासिम** कहा जाता, जब **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबी की ता'ज़ीम को इस से नह्य (मुमानअ़त) फ़रमाई, तो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان या नबिय्यल्लाह, या रसूलल्लाह कहा करते। (دلائل النبوۃ لابی نعیم ، الفصل الاول ، الجزء الاول ص۱۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर कीजिये ! हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम का मुआ़मला किस क़दर अहम है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को येह बात भी ना पसन्द है कि कोई मेरे ह़बीब (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) का नाम ले कर मुख़ात़ब करे। उ़लमा तसरीह़ (या'नी वज़ाह़त) फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को नाम ले कर निदा करनी ह़राम है। (फ़तावा रज़विय्या : 30/157) याद रहे ! हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ता'ज़ीम सिर्फ़ ह़याते ज़ाहिरी तक मह़दूद नहीं थी बल्कि रहती दुन्या तक आने वाले हर मुसलमान पर आप की शानो अ़ज़मत को तस्लीम करना लाज़िम है।

ह़ज़रते अ़ल्लाम इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ह़यात और बा'दे पर्दा पोशी (या'नी ज़ाहिरी वफ़ात के बा'द) ग़रज़ हर ह़ालत में हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तौक़ीर उम्मत पे लाज़िम और ज़रूरी है क्यूंकि दिलों में जितनी हुज़ूर की ता'ज़ीम बढ़ेगी उतना ही नूरे ईमान में इज़ाफ़ा होता रहेगा।

(तफ़्सीरे रूहुल बयान, जि. 7, स. 216)

ख़ाक हो कर इ़श्क़ में आराम से सोना मिला
जान की इकसीर है उल्फ़त रसूलुल्लाह की

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 153)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से इश्क़ो मह़ब्बत और हर मुआ़मले में आप का बेह़द अदब, ईमान में इज़ाफ़े का सबब और ईमान की जड़ है। इस को यूं समझिये कि अगर किसी दरख़्त की जड़ ही कट जाए तो वोह दरख़्त सूख जाता है और उस पर लगे हुवे फल और फूल गल सड़ के झड़ जाते हैं, इसी त़रह़ ता'ज़ीमे मुस्त़फ़ा, ईमान के पौदे की जड़ की ह़ैसिय्यत रखती है। इस के बिग़ैर ईमान का पौदा भी हरा भरा नहीं रह सकता और नेक आ'माल की सूरत में उस पर लगे हुवे फल और फूल ज़ाएअ़ हो जाते हैं। लिहाज़ा अपनी नेकियों को बाक़ी रखने और शजरे ईमान को बढ़ाने के लिये अदबे रसूल को लाज़िम समझिये। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने ता'ज़ीमे मुस्त़फ़ा की ऐसी दास्तानें तह़रीर फ़रमाईं कि इस की मिसाल मिलना ना मुमकिन है। आइये ! शम्ए़ रिसालत के इन परवानों के इश्क़े मुस्त़फ़ा के चन्द वाक़िआ़त सुनते हैं।

1. रिवायत में है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबा, कमाले अदबो एह़तिराम की वज्ह से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का दरवाज़ा नाख़ुनों से खट खटाते थे। (شرح شفا للملا علی قاری ج2،ص71)

2. इसी त़रह़ सुल्ह़े हुदैबिय्या के साल क़ुरैश ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़रवा बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ को (जो अभी ईमान न लाए थे) शहनशाहे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पास भेजा, उन्हों ने देखा कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जब वुज़ू फ़रमाते तो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان वुज़ू का पानी ह़ासिल करने के लिये इस क़दर तेज़ी से बढ़ते कि यूं मा'लूम होता, जैसे एक दूसरे से लड़ पड़ेंगे। जब लुआ़बे मुबारक डालते या नाक साफ़ करते तो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان उसे हाथों में ले कर (बत़ौरे तबर्रुक) अपने चेहरे और जिस्म पर मल लेते, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उन्हें कोई हुक्म देते तो फ़ौरन ता'मील करते और जब गुफ़्त्गू फ़रमाते तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने ख़ामोश रहते और अज़ राहे ता'ज़ीम, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ आंख

www.dawateislami.net

उठा कर न देखते। जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़रवा बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अहले मक्का के पास वापस गए तो उन से कहा : ऐ गुरौहे कुरैश ! मैं क़ैसरो किसरा और नज्जाशी के दरबारों में भी गया हूं, लेकिन खुदा की क़सम ! मैं ने किसी बादशाह की उस की क़ौम में ऐसी शानो शौकत और क़द्रो मन्ज़िलत नहीं देखी, जैसी शान (ह़ज़रत) मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) की उन के सह़ाबा (عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان) में देखी है। (شفا،فصل فی عادۃ الصحابۃ فی تعظیمہ،۲/۳۸)

3. एक बार हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام के चचा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से पूछा गया : ''اَنْتَ اَکْبَرُ اَمْ رَسُوْلُ اللّٰہ؟'' या'नी आप बड़े हैं या, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बड़े हैं ? तो उन्हों ने जवाब देते हुवे इरशाद फ़रमाया : ''اَکْبَرُ مِنِّیْ وَاَنَا کُنْتُ قَبْلَہٗ'' या'नी बड़े तो वोही हैं, बस पैदा मैं उन से पहले हुवा हूं। (کنزالعمال:۱۳/۲۲۴حدیث:۳۷۳۴۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से कैसी वालिहाना मह़ब्बत और ता'ज़ीम किया करते थे कि उ़म्र में बड़े होने के बा वुजूद भी बड़ाई की निस्बत रसूलुल्लाह की त़रफ़ ही करते। हमें चाहिये कि हम भी इ़श्क़े मुस्त़फ़ा की शम्अ़ न सिर्फ़ अपने दिल में रोशन करें बल्कि अपनी अवलाद को भी अस्लाफ़ के इ़श्क़े रसूल के प्यारे प्यारे वाक़िआ़त सुना कर बचपन ही से उन के दिल में मह़ब्बते रसूल को रासिख़ करें। इस के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 274 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''सह़ाबए किराम का इ़श्क़े रसूल''** का मुत़ालआ़ बेह़द मुफ़ीद रहेगा। इस के इ़लावा दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर हर माह कम अज़ कम तीन दिन मदनी क़ाफ़िले में सफ़र, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल, मदनी मुज़ाकरों और हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की बरकत से اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इ़श्क़े रसूल की दौलत नसीब होगी।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि एक मुसलमान के लिये ता'ज़ीमे मुस्तफ़ा किस क़दर अहम्मिय्यत की ह़ामिल है कि इस के बिग़ैर दा'वए ईमान ही बेकार है। याद रखिये ! जिस त़रह़ खुद ताजदारे अम्बिया, सरवरे हर दोसरा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते अक़्दस की ता'ज़ीम ज़रूरी है, इसी त़रह़ आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत रखने वाले अस्ह़ाब व अज़्वाज, आल व अवलाद और तबर्रुकात के साथ साथ आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़िक्रे अक़्दस की भी ता'ज़ीम ज़रूरी है। यूं तो तमाम ही दीनी मह़ाफ़िल में ज़िक्रे मुस्तफ़ा किया जाता है, लेकिन ख़ास कर इजतिमाए मीलाद में आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे ख़ैर किया जाता है, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शानो अ़ज़मत को बयान किया जाता है, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते मुबारका के प्यारे वाक़िआ़त सुनाए जाते हैं, लिहाज़ा जश्ने ई़दे मीलादुन्नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मनाना भी ता'ज़ीमे मुस्तफ़ा ही की एक सूरत है।"

(रूहुल बयान, जि. 9 स. 56)

इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि : मीलादे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मनाने में आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मर्तबे की ता'ज़ीम है। (الحاوی للفتاوی، ج۱، ص۲۲۲) इसी त़रह़ मुह़म्मद बिन यूसुफ़ सालेह़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मीलाद मनाने से आप की मह़ब्बत और ता'ज़ीम होती है। (سبل الھدی والرشاد، ج۱، ص۳۶۵) हमारी खुश नसीबी कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़न क़रीब रबीउ़ल अव्वल का मुबारक महीना हमारे दरमियान जलवा गर होने वाला है, इस रह़मतों वाले महीने के आते ही आ़शिक़ाने रसूल के दिलों में खुशियों की लहर दौड़ जाती है और वोह जश्ने ई़दे मीलादुन्नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की तय्यारियों में मसरूफ़ हो जाते हैं और क्यूं न हों कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद पर तो पूरी काइनात मसरूर हो गई, अ़र्श खुशी से झूम उठा, कुरसी भी खुशी से इतराने लगी और जिन्नों को आस्मान पर जाने से रोक दिया गया, तो वोह एक दूसरे से कहने लगे : बेशक हमें अपने रास्ते में बड़ी मशक़्क़त का

www.dawateislami.net

सामना हुवा है और फ़िरिश्ते इन्तिहाई ख़ुशी व रो'ब से तस्बीह़ ख़्वानी करने लगे, हवाएं झूम झूम कर चलने लगीं और बादलों को ज़ाहिर कर दिया, बाग़ात में टहनियां झुकने लगीं और काइनात के गोशे गोशे से "**अह्लव्व सह्लन मरह़बा**" की सदाएं आने लगी। (الروض الفائق، ص۲۴۳) अल ग़रज़ ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी सरासर रह़मतों और बरकतों का मम्बअ़ है, चुनान्चे, अस्ह़ाबे फ़ील की हलाकत का वाक़िआ़, फ़ारस के मजूसियों की एक हज़ार साल से जलाई हुई आग का एक लम्ह़े में बुझ जाना, किसरा के मह़ल का ज़लज़ला और उस के चौदह कंगुरों का मुन्हदिम (या'नी ज़मीन बोस) हो जाना, "हमदान" और "क़ुम" के दरमियान छे मील लम्बे छे मील चोड़े "बुह़ैरए सावह" का यका यक बिल्कुल ख़ुश्क हो जाना, ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की वालिदा के बदने मुबारक से एक ऐसे नूर का निकलना, जिस से "बसरा" के मह़ल रोशन हो गए। (المواهب اللدنية وشرح الزرقاني، ولادته...الخ، ١/١٦٧،٢٢١،٢٢٨،٢٢٧)

येह तमाम वाक़िआ़त इस सिलसिले की कड़ियां हैं, जो ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी से पहले ही "मुबशिरात" (या'नी ख़ुश ख़बरी देने वाले) बन कर आ़लमे काइनात को येह ख़ुश ख़बरी देने लगे कि

मुबारक हो वोह शह पर्दे से बाहर आने वाला है
गदाई को ज़माना जिस के दर पे आने वाला है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! जश्ने ई़दे मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मनाना एक मुबारक काम है, इस के मनाने वालों को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की त़रफ़ से बे शुमार दीनी व दुन्यवी रह़मतें मिलती हैं। जैसा कि तफ़्सीरे रूहुल बयान में है कि मह़फ़िले मीलाद शरीफ़ की बरकत साल भर तक घर में रहती है। (रूहुल बयान, 9/57) इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़स्त़लानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "विलादते बा सआ़दत के अय्याम में मह़फ़िले मीलाद करने के ख़्वास (ख़ुसूसिय्यत) से येह अम्र मुजर्रब (या'नी तजरिबा शुदा बात) है कि उस साल अम्नो अमान रहता है। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ

www.dawateislami.net

उस शख़्स पर रहमत नाज़िल फ़रमाए, जिस ने माहे विलादत की रातों को ईद बना लिया ।" (مواہب اللدنیۃ ج۱ص۱۴۸) जश्ने मीलाद मनाने वाले को दुन्यावी बरकतों के साथ साथ जन्नत की बिशारत भी है । शैख़े मुहक़्क़िक़ ह़ज़रत शाह अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत की रात ख़ुशी मनाने वालों की जज़ा येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें अपने फ़ज़्लो करम से **जन्नातुन्नईम** में दाख़िल फ़रमाएगा । मुसलमान हमेशा से मह़फ़िले मीलाद मुन्अ़क़िद करते आए हैं और विलादत की ख़ुशी में दा'वतें देते, खाने पकवाते और ख़ूब सदक़ा व ख़ैरात देते आए हैं । ख़ूब ख़ुशी का इज़्हार करते और दिल खोल कर ख़र्च करते हैं नीज़ आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत के ज़िक्र का एहतिमाम करते हैं और अपने मकानों को सजाते हैं और इन तमाम अफ़्आ़ले ह़सना (अच्छे कामों) की बरकत से उन लोगों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतों का नुज़ूल होता है ।

(ماثبت من السنّۃ ص۷۴ ملخصاً، صبح بہاراں، ص۱۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! आक़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मीलाद मनाने वालों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किस क़दर ख़ुश होता है और उन्हें कैसे कैसे अ़ज़ीमुश्शान इन्आ़मो इकराम से नवाज़ता है । लिहाज़ा जश्ने विलादत की ख़ुशी में मस्जिदों, घरों, दुकानों और सुवारियों पर नीज़ अपने मह़ल्ले में भी सब्ज़ सब्ज़ परचम लहराइये, ख़ूब चरागां कीजिये या कम अज़ कम बारह बल्ब तो ज़रूर रोशन कीजिये । रबीउ़ल अव्वल की बारहवीं रात हुसूले सवाब की निय्यत से इजतिमाए ज़िक्रो ना'त में शिर्कत कीजिये और सुब्ह़े सादिक़ के वक़्त सब्ज़ सब्ज़ परचम उठाए दुरूदो सलाम पढ़ते हुवे अश्कबार आंखों के साथ सुब्ह़े बहारां का इस्तिक़्बाल कीजिये ।

12 रबीउ़ल अव्वल के दिन हो सके तो रोज़ा भी रख लीजिये कि हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हर पीर शरीफ़ को रोज़ा रख कर अपना यौमे विलादत मनाया करते थे, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू

क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : बारगाहे रिसालत में पीर के रोज़े के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो इरशाद फ़रमाया : "इसी दिन मेरी विलादत हुई और इसी रोज़ मुझ पर वह्य नाज़िल हुई ।" (صحیح مسلم ص۵۹۱ حدیث ۱۱۶۲) याद रहे ! नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत पर ख़ुशी मनाने का हुक्म क़ुरआने करीम से साबित है। चुनान्चे, पारह 11 सूरए यूनुस की आयत नम्बर 58 में इरशाद होता है :

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰہِ وَبِرَحْمَتِہٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۵۸﴾

(پارہ۱۱، یونس۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ अल्लाह ही के फ़ज़्ल और उसी की रह़मत और इसी पर चाहिये कि ख़ुशी करें वोह उन के सब धन दौलत से बेहतर है।

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस आयते मुबारका के तह़त इरशाद फ़रमाते हैं : ऐ मह़बूब ! लोगों को येह ख़ुश ख़बरी दे कर उन्हें येह हुक्म भी दो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल और उस की रह़मत मिलने पर ख़ूब ख़ुशियां मनाओ। उ़मूमी ख़ुशी तो हर वक़्त मनाओ, ख़ुसूसी ख़ुशी उन तारीख़ों में जिन में येह ने'मत आई या'नी रमज़ान, ख़ुसूसन शबे क़द्र और रबीउ़ल अव्वल ख़ुसूसन बारहवीं तारीख़ में कि रमज़ान में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल क़ुरआन आया और रबीउ़ल अव्वल में रह़मतुल्लिल आ़लमीन, या'नी मुह़म्मदे मुस्तफ़ा (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) पैदा हुवे। येह फ़ज़्लो रह़मत या इन की ख़ुशी मनाना, तुम्हारे दुन्यवी जम्अ़ किये हुवे मालो मताअ़, रूपिया, मकान, जाएदाद, जानवर, खेती बाड़ी बल्कि अवलाद वग़ैरा सब से बेहतर है कि इस ख़ुशी का नफ़्अ़ शख़्सी नहीं बल्कि क़ौमी है। वक़्ती नहीं बल्कि दाइमी है। सिर्फ़ दुन्या में नहीं बल्कि दीनो दुन्या दोनों में है। जिस्मानी नहीं बल्कि दिली और रूह़ानी है। बरबाद नहीं बल्कि इस पर सवाब है।

(तफ़्सीरे नईमी, 11/369)

ईदे मीलाद हम, ताजदारे ह़रम — धूम मचाते रहें और मनाते रहें
सब्ज़ प्यारा अ़लम, ताजदारे ह़रम — ईदे मीलाद में, गाड़ेंगे याद में

(वसाइले बख़्शिश)

अहले सुन्नत का मज़हब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अहले सुन्नत के मज़हब में मजलिसे मीलादे पाक अफ़्ज़ल तरीन मन्दूबात (या'नी मुस्तह़ब्बात) और आ'ला तरीन नेक कामों में से है। (अल ह़क़्क़ुल मुबीन, स. 100)

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मीलाद शरीफ़ या'नी हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादते अक़्दस का बयान जाइज़ है। इसी के ज़िम्न में इस मजलिसे पाक में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ज़ाइल व मो'जिज़ात व सीरत (ख़स्लतें) व ह़ालात व ह़यात व रज़ाअ़त व बिअ़्सत के वाक़िआ़त भी बयान होते हैं, इन चीज़ों का ज़िक्र अह़ादीस में भी है और क़ुरआने मजीद में भी। अगर मुसलमान अपनी मह़फ़िल में बयान करें, बल्कि ख़ास इन बातों के बयान करने के लिये मह़फ़िल मुन्अ़क़िद करें, तो इस के नाजाइज़ होने की कोई वज्ह नहीं। इस मजलिस के लिये लोगों को बुलाना और शरीक करना ख़ैर की त़रफ़ बुलाना है, जिस त़रह़ वा'ज़ और जल्सों के ए'लान किये जाते हैं, इश्तिहारात छपवा कर तक़्सीम किये जाते हैं, अख़्बारात में इस के मुतअ़ल्लिक़ मज़ामीन शाएअ़ किये जाते हैं और इन की वज्ह से वोह वा'ज़ और जल्से नाजाइज़ नहीं हो जाते, इसी त़रह़ ज़िक्रे पाक के लिये बुलावा देने से इस मजलिस को नाजाइज़ व बिदअ़त नहीं कहा जा सकता।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 644-645)

रबीए़ पाक तुझ पर अहले सुन्नत क्यूं न क़ुरबां हों
कि तेरी बारहवीं तारीख़ वोह जाने क़मर आया

(क़िबालए बख़्शिश, स. 37)

ईदे मीलादुन्नबी और दा'वते इस्लामी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसलमानों के लिये सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरा, शहनशाहे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के यौमे विलादत से

www.dawateislami.net

बढ़ कर और कौन सा दिन "यौमे इन्आ़म" हो सकता है ? क्यूंकि काइनात की तमाम रौनक़ें और तमाम ने'मतें उन्ही के तुफ़ैल तो मिली हैं और येह दिन तो ईदों से भी बढ़ कर है, कि दोनों ईदें भी इसी के सदक़े में नसीब हुईं हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के ज़ेरे एहतिमाम पाकिस्तान समेत मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर हर साल ईदे मीलादुन्नबी صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم शानदार त़रीक़े से मनाई जाती है। रबीउ़ल अव्वल की 12 वीं शब को अ़ज़ीमुश्शान इजतिमाए़ मीलाद का इनइक़ाद होता है और ईद के रोज़ (12 रबीउ़ल अव्वल) **"मरह़बा या मुस्त़फ़ा"** की धूमें मचाते हुवे बे शुमार जुलूसे मीलाद निकाले जाते हैं, जिन में लाखों आ़शिक़ाने रसूल शरीक होते हैं।

ईदे मीलादुन्नबी तो ईद की भी ईद है
बिल यक़ीं हैं ईदे ईदां ईदे मीलादुन्नबी

(वसाइले बख़्शिश, स. 380)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मक्तूबे अ़त्तार :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर अहम काम के कुछ ज़रूरी आदाब होते हैं, जश्ने मीलादुन्नबी मनाने के आदाब में से येह है कि तमाम ग़ैर शरई़ कामों से इजतिनाब किया जाए, मसलन गली या सड़क वग़ैरा पर इस त़रह़ सजावट करना कि जिस से गाड़ी वालों और पैदल चलने वालों को तक्लीफ़ का सामना करना पड़े, नाजाइज़ है। चरागां देखने के लिये औ़रतों का अजनबी मर्दों के दरमियान बे पर्दा निकलना नीज़ बा पर्दा औ़रतों का भी मुरव्वजा अन्दाज़ में मर्दों में इख़्तिलात़ (या'नी ख़ल्त़ मल्त़ होना) इन्तिहाई अफ़सोस नाक है, नीज़ बिजली की चोरी भी नाजाइज़ है, लिहाज़ा इस सिलसिले में बिजली फ़राहम करने वाले इदारे से राबित़ा कर के जाइज़ ज़राएअ़ से चरागां की तरकीब बनाइये। जुलूसे मीलाद में ह़त्तल इमकान बा वुज़ू रहिये, नमाज़े बा जमाअ़त की पाबन्दी का ख़याल रखिये।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ ने जश्ने मीलाद मनाने के बारे में अपने एक मक्तूब में कुछ अहम मदनी फूल अ़त़ा फ़रमाए हैं। आइये ! हम भी इस मक्तूबे अ़त्त़ार को तवज्जोह के साथ सुनते हैं :

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط सगे मदीना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी عُفِیَ عَنۡہُ की जानिब से तमाम आ़शिक़ाने रसूल इस्लामी भाई / इस्लामी बहनों की ख़िदमतों में जश्ने विलादत की ख़ुशी में लहराते हुवे सब्ज़ सब्ज़ परचमों, जगमगाते बल्बों और नन्हें नन्हें कुम्कुमों को चूमता हुवा, झूमता हुवा शहद से भी मीठा मक्की मदनी सलाम :

اَلسَّلَامُ عَلَیۡکُمۡ وَرَحۡمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ   اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ عَلٰی کُلِّ حَال

तुम भी कर के उन का चर्चा अपने दिल चमकाओ
ऊंचे में ऊंचा नबी का झंडा घर घर में लहराओ

चांद रात को इन अल्फ़ाज़ में तीन बार मसाजिद में ए'लान करवाइये : ‘‘तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों को मुबारक हो कि रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ का चांद नज़र आ गया है।’’

रबीउ़ल अव्वल उम्मीदों की दुन्यां साथ ले आया
दुआ़ओं की क़बूलिय्यत को हाथों हाथ ले आया

मर्द का दाढ़ी मुन्डवाना या एक मुठ्ठी से घटाना, दोनों ह़राम है। इस्लामी बहन का बे पर्दगी करना ह़राम है। बराहे करम ! रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ की बरकत से इस्लामी भाई हमेशा के लिये एक मुठ्ठी दाढ़ी और इस्लामी बहनें मुस्तक़िल शरई़ पर्दा और ज़हे क़िस्मत ! मदनी बुरक़ा पहनने की निय्यत करें। (मर्द का दाढ़ी मुन्डाना या एक मुठ्ठी से घटाना और औ़रत का बे पर्दगी करना ह़राम और फ़ौरन तौबा कर के इन गुनाहों से बाज़ आना वाजिब है।)

झुक गया का'बा सभी बुत मुंह के बल औंधे गिरे
दबदबा आमद का था अह्लव्व सह्लन मरह़बा

(वसाइले बख़्शिश, स. 147)

www.dawateislami.net

सुन्नतों और नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने का अ़ज़ीम नुस्ख़ा येह है कि तमाम आ़शिक़ाने रसूल इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" करते हुवे मदनी इन्आ़मात के रिसाले पुर कर के हर माह (की पहली तारीख़ को) जम्अ़ करवाने की निय्यत करें, हाथ उठा कर कहिये : اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

बदलियां रह़मत की छाई बून्दियां रह़मत की आई
अब मुरादें दिल की पाई आमदे शाहे अ़रब है

(क़िबालए बख़्शिश, स. 184)

तमाम आ़शिक़ाने रसूल ब शुमूले निगरान व ज़िम्मादारान, रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ में ख़ुसूसिय्यत के साथ कम अज़ कम तीन (3) रोज़ा मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल करें और इस्लामी बहनें 30 दिन तक रोज़ाना घर के अन्दर (सिर्फ़ घर की इस्लामी बहनों और मह़रमों में) दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत जारी करें और फिर आयिन्दा भी रोज़ाना जारी रखने की निय्यत फ़रमाएं।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो
सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो

अपनी मस्जिद, घर, दुकान, कारख़ाने वग़ैरा पर 12 अ़दद वरना कम अज़ कम एक अ़दद सब्ज़ सब्ज़ परचम रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ की चांद रात से ले कर सारा महीना लहराइये। बसों, वेगनों, ट्रकों, ट्रावेलों, टेक्सियों, रिक्षों वग़ैरा पर ज़रूरतन अपने पल्ले से परचम ख़रीद कर बांध दीजिये। अपनी साईकल, स्कूटर और कार पर भी लगाइये। हर त़रफ़ सब्ज़ सब्ज़ परचमों की बहारें मुस्कुराती नज़र आएंगी। उ़मूमन ट्रकों के पीछे जानदारों की बड़ी बड़ी तस्वीरें और बे हूदा अश्आ़र लिखे होते हैं। मेरी आरज़ू है कि ट्रकों, बसों, वेगनों, रिक्षों, टेक्सियों, सूज़ूकियों और कारों वग़ैरा के पीछे नुमाया अल्फ़ाज़ में तह़रीर हो, **मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है**। मालिकाने बस और ट्रान्सपोर्ट वालों से मिल कर मदनी तरकीबें कीजिये और सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ के दिल की दुआ़एं लीजिये।

www.dawateislami.net

ज़रूरी ऐह़तियात़ : अगर झन्डे पर नक़्शे ना'ले पाक या कोई लिखाई हो तो इस बात का ख़याल रखिये कि न वोह लीरे लीरे हो, न ही ज़मीन पर तशरीफ़ लाए। नीज़ जूं ही रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ का महीना तशरीफ़ ले जाए फ़ौरन उतार लीजिये। अगर एह़तियात़ नहीं कर पाते और बे अदबी हो जाती है तो बिग़ैर नक़्श व तह़रीर के सादा सब्ज़ परचम लहराइये।

(सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ भी ह़त्तल इमकान अपने मकाने बे निशान बनाम "बैतुल फ़ना" पर सादा झन्डा लगवाता है)

नबी का झन्डा ले कर निकलो दुन्या पर छा जाओ

नबी का झन्डा अम्न का झन्डा घर घर में लहराओ

अपने घर पर 12 झालरों (या'नी लड़ियों) या कम अज़ कम 12 बल्बों से नीज़ अपनी मस्जिद व मह़ल्लों में भी 12 दिन तक ख़ूब चरागां कीजिये (मगर इन कामों के लिये बिजली चोरी करना ह़राम है। लिहाज़ा इस सिलसिले में बिजली फ़राहम करने वाले इदारे से राबित़ा कर के जाइज़ ज़राएअ़ की तरकीब बनाइये) सारे अ़लाक़े को सब्ज़ सब्ज़ परचमों और रंग बिरंगे बल्बों से सजा कर दुल्हन बना दीजिये। मस्जिद और घर की छत पर चौक वग़ैरा पर, राहगीरों और सुवारियों को तक्लीफ़ से बचाते हुवे हुक़ूक़े आ़म्मा तलफ़ किये बिग़ैर फ़ज़ा में मुअ़ल्लक़ 12 मीटर या ह़स्बे ज़रूरत साइज़ के बड़े बड़े परचम लहराइये। बीच सड़क पर परचम मत गाड़िये कि इस से ट्राफ़िक का निज़ाम मुतअस्सिर होता है। नीज़ गली वग़ैरा कहीं भी इस त़रह़ की सजावट न कीजिये, जिस से मुसलमानों का रास्ता तंग हो और उन की ह़क़ तलफ़ी और दिल आज़ारी हो।

मशरिक़ो मग़रिब में इक इक बामे का'बा पर भी एक

नस्ब परचम हो गया, अह्लव्व सह्लन मरह़बा

(वसाइले बख़्शिश, स. 146)

हर इस्लामी भाई ह़स्बे तौफ़ीक़ ज़ियादा, वरना कम अज़ कम 12 रूपे के मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ रसाइल और मदनी फूलों के मुख़्तलिफ़ पेम्फ़लेट, जुलूसे मीलाद में बांटे और इस्लामी बहनें भी तक़्सीम करवाएं। इसी

www.dawateislami.net

त़रह़ सारा साल अपनी दुकान वग़ैरा पर तक़्सीमे रसाइल का एहतिमाम फ़रमा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये। शादी ग़मी की तकारीब में और मर्हूमों के इसाले सवाब की ख़ाति़र भी "तक़्सीमे रसाइल" कीजिये ! और दीगर मुसलमानों को इस की तरग़ीब दीजिये।

बांट कर मदनी रसाइल दीन को फैलाइये
कर के राज़ी ह़क़ को ह़क़दारे जिनां बन जाइये

सगे मदीना का तह़रीर कर्दा पेम्फ़लेट "जश्ने विलादत के 12 मदनी फूल" मुमकिन हो तो 112 वरना कम अज़ कम 12 अ़दद नीज़ हो सके तो रिसाला "सुब्ह़े बहारां" 12 अ़दद मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल कर के तक़्सीम कीजिये। खुसूसन उन तन्ज़ीमों के सरबराहों तक पहुंचाइये, जो जश्ने विलादत की धूमें मचाते हैं। रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ के दौरान 1200 रूपे अगर येह न हो सके तो 112 रूपे और अगर येह भी न बन पड़े तो 12 रूपे (बालिग़ान) किसी सुन्नी आ़लिम को पेश कीजिये। अगर अपनी मस्जिद के इमाम, मुअज़्ज़िन या खुद्दाम में बांट दें तब भी ठीक है बल्कि येह ख़िदमत हर माह जारी रखने की निय्यत करें तो मदीना मदीना। जुमुआ़ के रोज़ दें तो बेहतर कि जुमुआ़ को हर नेकी का सत्तर (70) गुना सवाब मिलता है। सुन्नतों भरे बयान का केसिट सुन कर कई लोगों की इस्लाह़ होने की ख़बरें हैं, आप ह़ज़रात में भी कुछ न कुछ ऐसे खुश नसीब होंगे जो बयान का केसिट सुन कर मदनी माह़ोल से वाबस्ता हुवे होंगे। लिहाज़ा ऐसी केसिटें और VCD,s लोगों तक पहुंचाना, दीन की अ़ज़ीम ख़िदमत और बे इन्तिहा सवाब का बाइ़स है, तो जिस से बन पड़े हफ़्ते में वरना महीने में कम अज़ कम 12 ऑडियो या वीडियो केसिटें सुन्नतों भरे बयान की ज़रूर फ़रोख़्त करे। मुख़य्यर इस्लामी भाई अगर मुफ़्त तक़्सीम करें तो मदीना मदीना। जश्ने विलादत की खुशी में बयान की केसिटें और VCD,s ख़ूब तक़्सीम फ़रमाइये और तब्लीग़े दीन में ह़िस्सा लीजिये। शादियों के मवाक़ेअ़ पर "शादी कार्ड" के साथ रिसाला और हो सके

तो बयान का केसिट या VCD भी मुन्सलिक फ़रमाइये। ईद कार्डज़ का रवाज ख़त्म कर के इस जगह भी येही राइज कीजिये ताकि जो रक़म ख़र्च हो, उस से दीन का भी फ़ाइदा हो। मुझे लोग क़ीमती ईद कार्ड भिजवाते हैं, इस से दिल ख़ुश होने के बजाए जलता है। काश ! ईद कार्डज़ पर ख़र्च होने वाली रक़म, दीन के काम में सर्फ़ की जाती ! नीज़ उस पर लगी हुई अफ़्शां (या'नी चमकदार पावडर) से सख़्त परेशानी होती है।

उन के दर पे पलने वाले अपना आप जवाब
कोई ग़रीब नवाज़ तो कोई दाता लगता है

बड़े शहर में हर अ़लाक़ाई मुशावरत का निगरान (कस्बे वाले कस्बे में) 12 दिन तक रोज़ाना मुख़्तलिफ़ मसाजिद में अ़ज़ीमुश्शान सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ात मुन्अ़क़िद करे (ज़िम्मेदार इस्लामी बहनें घरों में इजतिमाअ़ात फ़रमाएं) रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ के दौरान होने वाले तमाम इजतिमाअ़ात में जिन से हो सके वोह सारा महीना सब्ज़ परचम साथ लाया करें।

लब पे ना'ते रसूले अकरम हाथों में परचम
दीवाना सरकार का कितना प्यारा लगता है

ग्यारह (11) की शाम को वरना 12 वीं शब को ग़ुस्ल कीजिये। हो सके तो इस ईदों की ईद की ता'ज़ीम की निय्यत से सफ़ेद लिबास, इमामा, सर बन्द, टोपी, सर पर ओढ़ने की सफ़ेद चादर, पर्दे में पर्दा करने के लिये कथ्थई चादर, मिस्वाक, जेब का रूमाल, चप्पल, तस्बीह़, इत्र की शीशी, हाथ की घड़ी, क़लम, मदनी क़ाफ़िला पेड वग़ैरा अपने इस्ति'माल की हर चीज़ मुमकिना सूरत में नई लीजिये। (इस्लामी बहनें भी अपनी ज़रूरत की जो अश्या मुमकिन हों वोह नई लें)

आई नई हुकूमत सिक्का नया चलेगा
आ़लम ने रंग बदला सुब्हे शबे विलादत

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बयान का खुलासा !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज के बयान में हम ने सुना कि

❁ रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम, ईमान का हि़स्सा है। बनी इस्राईल के 200 सालह गुनाह गार व बदकार शख़्स की बख़्शिश का ज़रीआ़ ता'ज़ीमे मुस्त़फ़ा ही बनी।

❁ सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में ता'ज़ीमे मुस्त़फ़ा का बहुत ज़ियादा जज़्बा था।

❁ ता'ज़ीमे मुस्त़फ़ा ह़याते मुबारक में ही नहीं, बल्कि रहती दुन्या तक आने वाले हर मुसलमान पर लाज़िम है।

❁ मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से इश्क़ो मह़ब्बत और हर मुआ़मले में आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का बे ह़द अदब, ईमान में इजाफ़े का सबब और ईमान की जड़ है।

❁ किसी बादशाह की उस की क़ौम में ऐसी शानो शौक़त और क़द्रो मन्ज़िलत नहीं देखी गई, जैसी शान मह़बूबे रह़मान, (ह़ज़रते) मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) की उन के सह़ाबा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में देखी गई।

❁ आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत रखने वाले आल व अस्ह़ाब व अज़्वाज, अवलाद तबर्रुकात और आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़िक्रे अक़्दस की भी ता'ज़ीम ज़रूरी है।

❁ ता'ज़ीमे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का तक़ाज़ा येह भी है कि आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मन्सूब हर मुबारक चीज़ की ता'ज़ीम की जाए।

❁ आ़शिक़ाने रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जश्ने ईदे मीलादुन्नबी भी बड़ी धूम धाम से मनाते हैं, क्यूंकि येह दिन हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत की वज्ह से अ़ज़मत वाला है।

❁ हमें भी चाहिये कि सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का जश्न मना कर, रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करें, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की बे शुमार रह़मतें और ढेरों बरकतें ह़ासिल होंगी।

www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम !

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी सारी दुन्या में इश्क़े रसूल की शम्एं रौशन करने और नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये मुख़्तलिफ़ शो'बाजात के ज़रीए़ दीने मतीन की ख़िदमत में मसरूफ़े अ़मल है, इन्ही शो'बों में से एक शो'बा **"मजलिसे तराजिम"** भी है जो अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ और मक्तबतुल मदीना की कुतुबो रसाइल का मुख़्तलिफ़ ज़बानों में तर्जमा करने की ख़िदमत सर अन्जाम दे रही है ताकि उर्दू पढ़ने वालों के साथ साथ दुन्या की दीगर ज़बाने बोलने वाले करोड़ों लोग भी फ़ैज़ याब हो सकें और उन का भी येह मदनी ज़ेह्न बन जाए कि **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इन्तिहाई क़लील अ़र्से में अब तक इस मजलिस के तह्त दुन्या की मुख़्तलिफ़ ज़बानों में शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की बहुत सी तसानीफ़ और मक्तबतुल मदीना की कुतुबो रसाइल का तर्जमा हो चुका है। हमें भी चाहिये कि मक्तबतुल मदीना की कुतुबो रसाइल का ख़ुद भी मुत़ालआ़ करें और अपने दोस्त व अह़बाब को भी पढ़ने की तरग़ीब दिलाएं, तक़्सीम का सिलसिला भी जारी रखे और हो सके तो नेकी की दा'वत आ़म करने की निय्यत से तह़ाइफ़ में कुतुबो रसाइल देते रहें।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

12 मदनी कामों में से 1 मदनी काम हफ़्तावारमदनी मुज़ाकरा

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी का मुश्क़बार मदनी माह़ोल अच्छी सोह़बत फ़राहम करता है, इसी की बरकत से लाखों लोग गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो

कर नेकियों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। आप भी दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये और ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में ह़िस्सा लीजिये। ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से हफ़्तावार मदनी काम "**मदनी मुज़ाकरा**" में अव्वल ता आख़िर शिर्कत भी है। मदनी मुज़ाकरे की तो किया ही बात है कि इस में शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से किये गए मुख़्तलिफ़ सुवालात के दिलचस्प जवाबात की सूरत में इ़ल्मे दीन ह़ासिल होता है और इ़ल्मे दीन की फ़ज़ीलत में आता है कि ह़ज़रते सय्यदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : हु़ज़ूरे पुर नूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू ज़र ! رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ तुम्हारा इस ह़ाल में सुब्ह़ करना कि तुम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब से एक आयत सीखी हो, येह तुम्हारे लिये 100 रक्अ़ते नफ़्ल पढ़ने से बेहतर और तुम्हारा इस ह़ाल में सुब्ह़ करना कि तुम ने इ़ल्म का एक बाब सीखा हो, जिस पर अ़मल किया गया हो या न किया गया हो, तो येह तुम्हारे लिये 1000 रक्अ़त नवाफ़िल पढ़ने से बेहतर है। (ابن ماجه، كتاب السنة، ج١، ص١٤٢، حديث٢١٩)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये, हाथों हाथ निय्यत करते हैं कि हम भी हर हफ़्ते मदनी मुज़ाकरे में अव्वल ता आख़िर शिर्कत को यक़ीनी बनाएंगे और दूसरे इस्लामी भाइयों को भी मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत की दा'वत देते रहेंगे, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ। ख़ूब ख़ूब बरकतें हासिल होंगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कई इस्लामी भाई मदनी मुज़ाकरे की बरकत से अपनी गुनाहों भरी ज़िन्दगी से तौबा कर चुके हैं। आइये ! तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार सुनते हैं, चुनान्चे,

मैं ने गुनाहों से तौबा कर ली !

वोहकेन्ट (पंजाब, पाकिस्तान) के इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि बहुत से नौजवानों की त़रह़ मैं भी मुतअ़द्दिद अख़्लाक़ी बुराइयों में मुब्तला था। फ़िल्में ड्रामे देखना, खेल कूद में वक़्त बरबाद करना मेरा मह़बूब मश्ग़ला था। घर में मदनी चैनल चलने की बरकत से मदनी मुज़ाकरा देखने की सआ़दत नसीब हुई, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ पिछले गुनाहों से ताइब

हो कर फ़राइज़ो वाजिबात का आ़मिल बनने के लिये कोशां हूं, चेहरे पर एक मुठ्ठी दाढ़ी शरीफ़ सजा ली है और मदनी हुल्या भी अपना लिया है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मज़ीद करम येह हुवा कि वालिदैन ने बख़ुशी मुझे "**वक़्फ़े मदीना**" कर दिया है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(इब्ने असाकिर जि. 9 स. 343)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

आइये ! शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "**163 मदनी फूल**" से मिस्वाक से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अहम मदनी फूल सुनते हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : ۞ दो (2) रक्अ़त मिस्वाक कर के पढ़ना बिग़ैर मिस्वाक की 70 रक्अ़तों से अफ़ज़ल है (اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب، ج١، ص١٢٧، حديث٣٣٩) ۞ मिस्वाक पीलू या ज़ैतून या नीम वग़ैरा कड़वी लकड़ी की हो। ۞ मिस्वाक की मोटाई छुंगलियां या'नी छोटी उंगली के बराबर हो। ۞ मिस्वाक एक बालिश्त से ज़ियादा लम्बी न हो वरना उस पर शैत़ान बैठता है। ۞ इस के रेशे नर्म हों कि सख़्त रेशे दांतों और मसूड़ों के दरमियान ख़ला (GAP) का बाइ़स बनते हैं। ۞ मिस्वाक ताज़ा हो तो ख़ूब (या'नी बेहतर) वरना कुछ देर पानी के गिलास में भिगो कर नर्म कर लीजिये। ۞ मुनासिब है कि इस के रेशे

रोज़ाना काटते रहिये कि रेशे उस वक़्त तक कार आमद रहते हैं जब तक उन में तल्ख़ी बाक़ी रहे। ۞ दांतों की चौड़ाई में मिस्वाक कीजिये। ۞ जब भी मिस्वाक करनी हो कम अज़ कम 3 बार कीजिये। ۞ हर बार धो लीजिये। ۞ मिस्वाक हाथ में इस त़रह़ लीजिये कि छुंगलियां या'नी छोटी उंगली उस के नीचे और बीच की 3 उंगलियां ऊपर और अंगूठा सिरे पर हो। ۞ पहले सीधी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर उल्टी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर फ़िर सीधी त़रफ़ नीचे फिर उल्टी त़रफ़ नीचे मिस्वाक कीजिये। ۞ मुठ्ठी बांध कर मिस्वाक करने से बवासीर हो जाने का अन्देशा है। ۞ मिस्वाक वुज़ू की सुन्नते क़ब्लिया है अलबत्ता सुन्नतें मुअक्कदा उसी वक़्त है जब कि मुंह में बदबू हो। (ماخوذ از فتاویٰ رضویہ، ج۱، ص۸۳۷)

۞ मिस्वाक जब ना क़ाबिले इस्ति'माल हो जाए तो फैंक मत दीजिये कि येह आलए अदाए सुन्नत है, किसी जगह एह़तियात़ से रख दीजिये या दफ़्न कर दीजिये या पथ्थर वग़ैरा वज़्न बांध कर समन्दर में डूबो दीजिये। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 294 ता 295 का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये)

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो 2 कुतुब "बहारे शरीअ़त" ह़िस्सा 16 (312 सफ़्ह़ात) "सुन्नतें और आदाब" (120 सफ़्ह़ात) हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तर्बिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

मुझ को जज़्बा दे सफ़र करता रहूं परवर दगार

सुन्नतों की तर्बिय्यत के क़ाफ़िले में बार बार

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 7 दुरूदे पाक और 1 दुआ़

﴾1﴿ शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ الْحَبِیْبِ الْعَالِی الْقَدْرِ الْعَظِیْمِ الْجَاہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा तो मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं ।** (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات ص ۱۵۱ ملخصًا)

﴾2﴿ तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।** (اَیضاً ص ۶۵)

﴾3﴿ रह़मत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर **रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं ।** (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۲۷۷)

﴾4﴿ एक हज़ार दिन की नेकियां :

جَزَی اللّٰہُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَّا ھُوَ اَھْلُہٗ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक को पढ़ने वाले के लिये **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं ।** (مَجْمَعُ الزَّوَائِد)

www.dawateislami.net

﴾5﴿ छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِیْ عِلْمِ اللّٰہِ صَلَاۃً دَآئِمَۃً بِدَوَامِ مُلْکِ اللّٰہِ

ह़ज़रते अह़मद सावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** ह़ासिल होता है । (اَفضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السّادات)

﴾6﴿ कुर्बे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَہٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान बिठा लिया । इस से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तअ़ज्जुब हुवा कि **येह कौन ज़ी मर्तबा है !!!** जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है । (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۱۲۵)

﴾7﴿ दुरूदे शफ़ाअ़त :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْہُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَکَ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ

शाफ़ेए़ उमम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है ! ! !**

(الترغیب والترہیب ج۲ص۳۲۹،حدیث۳۱)

हर रात इबादत में गुज़ारने का आसान नुस्ख़ा

ग़राइबुल क़ुरआन सफ़ह़ा 187 पर एक रिवायत नक़्ल की गई है कि जो शख़्स रात में येह दुआ़ 3 मरतबा पढ़ लेगा तो गोया उस ने शबे क़द्र को पा लिया । लिहाज़ा हर रात इस दुआ़ को पढ़ लेना चाहिये ।

दुआ़ येह है :

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْحَلِیْمُ الْکَرِیْمُ ، سُبْحٰنَ اللّٰہِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْم

(या'नी ख़ुदाए ह़लीम व करीम के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सातों आस्मानों और अ़र्शे अ़ज़ीम का परवर दगार है) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. **1163-1164**

www.dawateislami.net